मैं तुम पिताओं को लिख रहा हूँ

1 यूहन्ना 2:14 फ्रैंकलिन के नोट्स

परमेश्वर ने अपने एक भविष्यवक्ता द्वारा अपनी कलीसियाओं के अगुवों और अपने राज्य के सब अधिकारियों के लिए एक सन्देश दिया। यह सन्देश हमारे वर्तमान समय के विषय में है :

कलीसिया के लिए परमेश्वर का वचन :

मेरे और भी **अधिक सामर्थ्य** के साथ आत्मा का **उंडेला जाना** आनेवाला है। मैं अपनी कलीसिया के अगुवों को **पिता** बनने की बुलाहट दे रहा हूँ।

मैं उनसे कहता हूँ कि तुम अपनी **समझ** और अपना **प्रकाशन**, अपना **अधिकार** और **ज्ञान**, अपना मार्गदर्शन और जो कुछ भी तुमने अपने अनुभव से प्राप्त किया है, वे सब उन्हें **दो जिन्हें मैं तुम्हें दिखाऊंगा।**

अपने हाथ उन पर रखो और उन्हें उनके **गंतव्य** और **मीरास** की ओर जाने के लिए **पुकरो।** उनके **पिता** बनें और इस यात्रा में **उनके लिए मार्ग तैयार करें।** उनकी सहायता करें। **उन्हें ऊँचा उठाएँ।** और उन्हें मेरी बुलाहट और उनकी सेवकाई के लिए **तैयार करें।**

जो मैंने तुम्हें उद्देश्य दिया है उसे **निष्ठा** के साथ पूरा करो। **अब** अगुवों को आनेवाले उस समय के लिए **तैयार करना** आरम्भ करो जब पवित्र आत्मा उंडेला जाएगा।

यह साभिप्राय आत्मा का **दिया जाना** और भरपूरी से मीरास का दिया जाना है और साथ ही यह उन लोगों को खड़ा करना है जो कहते हैं कि वे इस परिवर्तनकाल में **आपके साथ सहयोगी होने** को तैयार हैं। जो कुछ भी तुम मेरे राज्य में देते हो, तुम सदा उससे अधिक प्राप्त करोगे।

परमेश्वर आत्मा के उंडेले जाने के लिए **अगली पीढ़ी** को तैयार कर रहा है : अपने **पुत्र** और **पुत्रियों** को **सामर्थ्य** से भरना।

रोमियों 8:19 कि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से **परमेश्वर** के **पुत्रों** (और **पुत्रियों**) के प्रगट होने की **बाट जोह** रही है।

- वह अपने वर्तमान नेतृत्व की प्रतीक्षा कर रहा है। इब्रानियों 10:12-13

यह आत्मा का बड़ा और शक्तिशाली प्रयास होगा जो विश्व भर में हर जाति के लोगों में उंडेला जाएगा। पिता के लिए आपकी **सहमति**, इसमें **भाग लेना** और **चुनाव** महत्वपूर्ण है, उन्हें तैयार करें और क्रियान्वित करें जिससे उसके **पुत्र और पुत्रियाँ** उसकी बुलाहट से दूर होने से बच सकें।

परमेश्वर चाहता है कि हम जितनी जल्दी हो उतनी जल्दी **पुत्र और पुत्रियों** को **परिपक्व** करने पर **केन्द्रित** हों और इस **उद्देश्य** को पूरा करें ताकि वे इन अंतिम दिनों में युद्ध में विजयी हों। (2 तीमुथियुस 3:1)।

जैसा यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की सेवकाई के बारे में कहा गया था(लूका 1:17) इस पवित्र आत्मा के उंडेले जाने का उद्देश्य यह है कि परमेश्वर के **पुत्र और पुत्रियाँ** एलिय्याह की **आत्मा** और **सामर्थ्य** में हो कर **उसके** आगे आगे चलें **कि पितरों का मन बाल-बच्चों की ओर फेर दें;** और आज्ञा न माननेवालों को धर्मियों की समझ पर लाएँ; **और प्रभु के लिये एक योग्य प्रजा तैयार करें।**

आइए हम अपनी परिपक्वता के स्तर पर विचार करें :

इब्रानियों 5:12-14 समय के विचार से तो तुम्हें **गुरु** हो जाना चाहिए था, तौभी यह आवश्यक हो गया है कि कोई **तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए।** तुम तो ऐसे हो गए हो कि तुम्हें **अन्न** के बदले अब तक **दूध** ही चाहिए। क्योंकि **दूध पीनेवाले बच्चे** को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह **बालक** है। पर अन्न **सयानों** के लिये है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ **अभ्यास** करते-करते भले-बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं। गलातियों 4:1-7

गुरु के रूप में — एक पिता एक शिक्षक होता है — हमें निरंतर सीखनेवाले होना चाहिए, जैसा इस वचन में भी लिखा है कि परिपक्वता से फिसलकर वापस दूध पीनेवाले बच्चे बन जाना सम्भव है।

- जब हमारा नया जन्म होता है तो हम **शिशु** होते हैं और हमें सिखाए जाने की ज़रूरत होती है।

  वे स्वयं नहीं खोज सकते — उन्हें खोजना पड़ेगा।

  वे स्वयं नहीं आ सकते — उन्हें लाना पड़ेगा।

  वे स्वयं नहीं सीख सकते — उन्हें सिखाना पड़ेगा।

1 यूहन्ना **2:12-14** हे (1) **बालको**, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूँ कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए हैं।

- एक **शिशु** जब यह जान जाता है कि उसके पाप क्षमा कर दिए गए हैं तो वह **बालक** बन जाता है।

(2) हे **जवानो** (**पुत्र और पुत्रियों**), मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है कि तुम **बलवन्त** हो, और **परमेश्वर का वचन** तुम में बना रहता है, और तुम ने उस **दुष्ट पर जय पाई है**।

- **पुत्र** और **पुत्रियाँ** परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं लूका 6:46
- और न शैतान को अवसर दो। इफिसियों 4:27
- अपने बैरियों से प्रेम रखो और उनके लिए प्रार्थना करो, और दोष मत लगाओ। मत्ती 5:44; 7:1

(3) हे **पितरो**, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है कि जो आदि से है तुम **उसे जान गए** हो।

- पिता अपने हृदय को, अपनी इच्छा को, अपनी संतानों के लिए अपने प्रेम को जानता है, और वह जो कुछ भी करेगा वह उनके लिए उत्तम होगा। उन्हें सिखाओ, उन्हें प्रशिक्षित करो, उनकी रक्षा करो, उनके लिए जो आवश्यक है उन्हें दो, उनकी अगुवाई करो और मार्गदर्शन दो, जब वे गिरें तो उन्हें उठाओ और फिर से प्रयास करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करो, उन्हें सेवा करने का अवसर दो, पूर्ण समर्पण के साथ उन्हें

उनकी सेवकाई में भेजो और उन्हें सहारा दें।

इफिसियों 4:11-16 उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, [और इन पाँचों सेवकाइयों का मिलकर लक्ष्य क्या है??] 12 **जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए।**

- यदि आपकी कलीसिया में यह प्रश्न पूछा जाए, "*क्या सब सेवक अपने हाथ ऊपर उठाएंगे?*" तो कितने लोग अपने हाथ ऊपर उठाएंगे??

क्या आप इस सच्चाई की शिक्षा दे रहें हैं कि सब विश्वासी सेवक हैं??

2 कुरिन्थियों 5:18-21 1 पतरस 2:9 प्रकाशितवाक्य 5:10

सेवा का काम क्या हैं?

- मसीह की देह **उन्नति पाए;**

- नए सदस्यों को लेकर आना और उन्हें परिपक्वता की ओर ले जाना।
  उदाहरण : गिनती 11 मूसा 70 प्राचीनों को सेवा के लिए नियुक्त करता है।

13 जब तक कि **हम सब** के सब विश्वास और **परमेश्वर के पुत्र की पहचान** में **एक** न **हो जाएँ**, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और **मसीह के पूरे डील-डौल** तक न बढ़ जाएँ।

14 ताकि हम आगे को **बालक न रहें** जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर-उधर घुमाए जाते हों।15 वरन् **प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों** में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में **बढ़ते जाएँ**, 16जिससे सारी देह, **हर एक जोड़ (प्रत्येक सदस्य)** की सहायता से एक **साथ मिलकर** और **एक साथ गठकर**, **उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक-ठीक कार्य करने के द्वारा उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।** फिलिप्पियों 3:13-14

- उपरोक्त पद पास्टरों के लिए उस बड़ी ज़रूरत को दर्शाते हैं कि वे उसके लोगों को परमेश्वर के **प्रेम में** परिपक्वता की ओर ले जाएँ। इफिसियों 3:16-19

1 कुरिन्थियों 4:15-16 क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे **सिखानेवाले** दस हज़ार भी होते, तौभी **तुम्हारे पिता बहुत से नहीं**; इसलिये कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हुआ। इसलिये मैं तुम से विनती करता हूँ कि मेरी सी चाल चलो।

क्यों???

- पिता होने के लिए इन बातों की ज़रूरत है : (1) **निरंतर अध्ययन और उन्नति**। और

(2) **खराई** की चाल चलना, और उन लोगों के लिए मसीह के **उदाहरण** के रूप में ठहरना जिनके आप पिता हैं।

भजन 15:1-2 हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा? 2 वह जो **खराई** से चलता और **धर्म** के काम करता है, और हृदय से **सच** बोलता है।

2 तीमुथियुस 2:15 अपने आप को परमेश्वर का **ग्रहणयोग्य** और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो **सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।**

- पिता होने के लिए बहुत समय और प्रतिबद्धता की ज़रूरत होती है।

- एक पास्टर अपने झुण्ड के सभी लोगों का "पितृ समान देखभाल" नहीं कर सकता, लेकिन उसे कुछ के लिए तो करना चाहिए → उनका जिनमें वह बुलाहट, धुन, समर्पण और आज्ञाकारिता को पाता है।

परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र यीशु का पिता समान देखभाल की :

यूहन्ना 5:19-23 इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो **पिता** को करते **देखता** है; क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है **उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता** है। क्योंकि **पिता पुत्र से प्रीति रखता है** और जो जो काम वह आप करता है, वह सब **उसे दिखाता है** …

- पुत्र या पुत्री के लिए इस बात में **प्रेरणा** का स्रोत कि वे उन्हीं कामों को करें जो उनका पिता करता है, **प्रेम** है। इसमें अर्थात बच्चों के प्रशिक्षण में कोई मांगें या नियम नहीं हैं। बिना प्रेम के की गई मांगों और नियमों से **पुत्र और पुत्रियों** में **विद्रोह** उत्पन्न होता है। जब पिता अपने बच्चों से प्रेम रखता है तो वे भी उसे प्रसन्न रखना चाहते हैं। तब उनकी प्रेरणा भय नहीं बल्कि प्रेम होती है।

1 यूहन्ना 4:14 और जब समय पूरा हुआ … **पिता ने पुत्र को** (उसे उसकी सेवकाई के लिए भेजा) जगत का उद्धारकर्ता करके **भेजा** है। संसार के पिताओं को भी ऐसा ही करना चाहिए।

यीशु ने समर्पित उद्देश्य के साथ अपने बारह शिष्यों की **पिता के समान** देखभाल की।

उसने उन्हें **बताया** और **दिखाया** कि कैसे बीमारों को चंगा करना है, अंधों को दृष्टिदान देना है, कोढ़ियों को शुद्ध करना है और मृतकों को जिलाना है। फिर उसने उन्हें उनके पहले सेवा कार्य के लिए **भेजा।**

- पास्टरों, पिताओं को भी ऐसा ही करना चाहिए।

फिर यीशु ने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, **उन्हें** अशुद्ध आत्माओं पर **अधिकार दिया** कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें। मत्ती 10:1

10:5-9 आज्ञा देकर भेजा….7 और चलते-चलते यह प्रचार करो : 'स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।' 8बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो। तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।

प्रेरित पौलुस ने कई शिष्यों की पिता समान देखभाल की :

- बरनबास / तीमुथियुस / तुखिकुस / इपफ्रुदीतुस / मरकुस / उनेसिमुस / लूका / गयुस और अरिस्तर्खुस प्रेरितों के काम 19:29

प्रतिशत में बात करें तो बहुत कम विश्वासियों ने इस प्रकार पिता सदृश प्रशिक्षण को पाया है, और इसलिए "सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है।" रोमियों 8:19

पिता के रूप में पोषण करना आपके लिए महत्वपूर्ण क्यों है???

- यशायाह 5:13 अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा बँधुआई में जाती है।
- होशे 4:6 ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नष्ट हो गई।

इसलिए :

- 1 तीमुथियुस 4:11 इन बातों की आज्ञा दे और सिखाता
- 2 तीमुथियुस 2:2 उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।

क्यों????

संसार को सामर्थ्य, बुद्धि और खराई से भरपूर परिपक्व पुत्र और पुत्रियों की ज़रूरत है और ज़रूरी है कि वह देखे।

1 कुरिन्थियों 4:20 क्योंकि **परमेश्वर का राज्य** बातों में नहीं परन्तु **सामर्थ्य** में है।

पौलुस ने कहा : 1 कुरिन्थियों 2:4-5 मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें **नहीं**, परन्तु **आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था**, [5]इसलिये कि **तुम्हारा विश्वास** मनुष्यों के ज्ञान पर **नहीं**, परन्तु **परमेश्वर की सामर्थ्य** पर निर्भर हो।

- **बहुत से लोग चिह्नों और चमत्कारों**, स्वप्नों, दर्शनों, चंगाइयों **के द्वारा विश्वास में आते हैं ...** बजाय इसके कि बहस या वाद-विवाद से आएँ।

- लेकिन विश्वास बनने के बाद -> बढ़ने और परिपक्व होने के लिए उन्हें शिक्षा की ज़रूरत होती है! उन्हें पिता के समान पोषण देने की ज़रूरत है!

अब आइए हम पुत्र होने के विषय में बातचीत करें।

- इस्तेमाल किया गया शब्द "पुत्र" लिंग को नहीं बताता बल्कि यह परिपक्वता को दर्शाता है!!!

आप पुत्र या पुत्री परिपक्व होने की प्रक्रिया से जाकर बनते हैं।

रोमियों 1:3-4 अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में [4]और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण **सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।**

- यीशु के विषय में यह बताया गया, और उसकी गवाही और प्रमाण यह होने का है -> कि **वह सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र है।**
- उसने बीमारों को चंगा किया/ अंधों को दृष्टि दी/ मृतकों को जिलाया/ दुष्टात्माओं को निकाला/ आंधी को शांत किया/ वह पानी पर चला/ उसने भोजन को कई गुणा बढ़ाया/ पानी को दाखरस बनाया/ और ...
- **हम परमेश्वर की सन्तान** (गलातियों 4:1) **या सामर्थ्य के साथ परमेश्वर के पुत्र** (परिपक्व) हैं, और हम मसीह के साथ **मृतकों में से जिलाए** भी गए हैं। (इफिसियों 2:5-6 और रोमियों 6:4)

गलातियों 3:26 **क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की *सन्तान हो।**
*यूनानी में परिपक्व पुत्र

- जब हम विश्वास करते हैं -> और यीशु को ग्रहण करते हैं - > तो पवित्र आत्मा **हमारे भीतर** आता है -> और हमारा **नया जन्म** होता है और **सब** (नर और नारी) **परमेश्वर की सन्तान** कहलाते हैं जिन्हें विकास और परिपक्व होने के लिए दूध और ठोस आहार की ज़रूरत होती है। 1 यूहन्ना 3:1 देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है. . .
- नए नियम में बहुत से स्थानों में प्रयुक्त "पुत्र" का सम्बन्ध लिंग से नहीं बल्कि परिपक्वता से है।
- **हमें बच्चे** समझा जाता है क्योंकि हमने अभी नया जन्म पाया है और परमेश्वर का आत्मा हमारे **भीतर** आया है कि हमें **सिखाए**, हमारी **अगुवाई करे** और हमें "परमेश्वर की बातों" को **दिखाए।** [यूहन्ना 20:21-22 और लूका 24:45; प्रेरितों के काम 1:2-8]

यीशु आत्मा से उत्पन्न हुआ, और एक शिशु से बालक बना, और फिर 30 वर्ष की आयु में उसने पुत्र के रूप में पानी में बपतिस्मा पाया, और फिर पवित्र आत्मा उस पर उतरा तथा उसे उसकी सेवकाई के लिए अभिषिक्त किया और सशक्त किया। (लूका 4:18)।

- हमारे पास बच्चे बने रहने का कोई बहाना नहीं सिवाय इसके कि हम पवित्र आत्मा को "बुझा*" रहे हों (*1 थिस्सलुनीकियों 5:19), और जंगल में रहते हुए एक ही पर्वत के चारों ओर बार-बार चक्कर लगा रहे हों तथा "यरदन पार" करके "प्रतिज्ञात देश" में जाने और **पुत्र और पुत्रियों** के रूप में बड़े-बड़े दानवों को पराजित करने से इनकार कर रहे हों।

- 1 कुरिन्थियों 10:11 पुराने नियम को इसलिए लिखा गया कि वह हमें चेतावनी दे और सिखाए। परमेश्वर पिता ने इस्राएल को मेमने के लहू से छुटकारा दिया और उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया; उसने उन्हें लाल समुद्र में बपतिस्मा दिया, उन्हें अपने सामर्थ्य की संतानों के रूप में प्रशिक्षित किया और फिर उन्हें यरदन नदी में से लेकर गया — जो उन्हें सशक्त करने के लिए पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का चित्रण था — ताकि वे उस प्रतिज्ञात देश में युद्ध लड़ें और विजय पाएँ। लेकिन उन्होंने इनकार किया और अगले अड़तीस साल उन्होंने जंगल में ही बिताए जब तक कि उनकी एक पीढ़ी मर न गई।

हमारी भी **यही गवाही होनी चाहिए**। हमारा जीवन यह **घोषित** करे कि हम "**सामर्थ्य के साथ पुत्र और पुत्रियाँ हैं**"।

किस प्रकार हमारा जीवन यह घोषित कर सकता है कि हम पुत्र और पुत्रियाँ हैं . . .

मत्ती 5:39-48 रोमियों 8:14 और 19 1 पतरस 2:21-23

यह कैसे पूरा हो सकता है? इसका उत्तर है :

- पिता हमें उस परिपक्वता के स्थान पर लेकर आएगा जहाँ हम जान पाएंगे :

तुम्हारे **भीतर** और तुम्हारे **ऊपर** कौन है। **प्रेरितों के काम 19:11-17** "**तुम कौन हो?**"

यूहन्ना 14:20 उस दिन (जब हम परिपक्वता में आएँगे और जानेंगे कि हम पुत्र और पुत्रियाँ हैं) **तुम जानोगे** कि (1) **मैं अपने पिता में हूँ, और** (2) **तुम मुझ में,** और (3) **मैं तुम में।**

- हम यीशु में हैं / यीशु पिता में है / अतः हम पिता में हैं / और यीशु हम में है।

यह कितना अद्भुत है???

- इसलिए : **जो मुझे सामर्थ्य देता है** उसमें मैं **सब कुछ कर सकता हूँ।** फिलिप्पियों 4:13
- क्योंकि **परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं** है।" लूका 1:37

यूहन्ना 14:23 **यदि** कोई **मुझ से प्रेम** रखेगा तो वह **मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता** उससे प्रेम रखेगा, और **हम** (यीशु और हमारा पिता) उसके पास (हमारे पास) आएँगे और **उसके साथ वास** (अक्षरशः निवासस्थान या आवास) **करेंगे।**

- हम वह निवासस्थान, अर्थात घर बन जाते हैं जहाँ सर्वशक्तिमान परमेश्वर **वास करता** है!!!
- यह आपके सृजे जाने का कारण है! परम प्रधान परमेश्वर के मंदिर! ! !

1 कुरिन्थियों 3:16 **क्या तुम नहीं जानते** कि **तुम परमेश्वर का मन्दिर हो**, और **परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?**

- यह भी देखें : इफिसियों 2:19-22 और 1 पतरस 2:4-5

यीशु ने एक अच्छा प्रश्न पूछा :

यूहन्ना 14:10 **क्या तू विश्वास नहीं करता** कि **मैं पिता में हूँ** और **पिता मुझ में है?** ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु **पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।**

- जब सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का पवित्र आत्मा हम में होता है, तो उसके साथ यह **संभव** हो जाता है कि जो बातें हम कहते हैं, अपनी ओर से नहीं हों... यह वह स्थान है जहाँ भविष्यवाणी, ज्ञान और बुद्धि की बातें प्रवेश करती हैं।

- पिता जो **हम में रहता** है वह **अपने काम करता है,** या वह अपने काम हम में और हमारे द्वारा करना **चाहता है**

11**मेरा विश्वास करो** कि **मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है;** नहीं तो **कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो।**

- विश्वासी बनें!!!

- किसी व्यक्ति को यीशु के विश्वास में लाने के लिए चिह्न और चमत्कार, या अद्‌भुत कार्य बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। बहस या विवाद ये काम कभी-कभार ही कर पाते हैं।

- और यीशु ने कहा: जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ। (यूहन्ना 20:21) हमारे भीतर सर्वशक्तिमान परमेश्वर का पवित्र आत्मा है!

12 "मैं तुम से **सच सच** कहता हूँ कि **जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ** <u>**वह भी करेगा**</u>, _क्योंकि हमारे भीतर पिता और यीशु का पवित्र आत्मा कार्य करता है वरन् **इनसे भी बड़े काम करेगा,** क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ। 13जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि **पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।**

- यह वह है जिसके लिए हम सृजे गए थे!
  मत्ती 10:7-8 **और चलते-चलते यह प्रचार करो** : '**स्वर्ग का राज्य** निकट आ गया है।' **बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो।** तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।

  प्रेरितों के काम 1:4-8 और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, "यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। 5क्योंकि यूहन्ना ने तो **पानी में बपतिस्मा दिया है** परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम **पवित्र आत्मा** से बपतिस्मा पाओगे। 8**परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे;** और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक **मेरे गवाह होगे।**"

- **पवित्र आत्मा** के **सामर्थ्य** से परिपूर्ण होना — अर्थात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा — "उसके गवाह" होने के लिए आवश्यक है।

- बपतिस्मा का अर्थ है "डुबोना" लूका इसे इस तरह लिखता है : 24:49 देखो, जिसकी **प्रतिज्ञा** मेरे पिता ने की

है, मैं उसको **तुम पर** उण्डेलूंगा, परन्तु जब तक तुम स्वर्गीय **सामर्थ्य से *परिपूर्ण** न हो जाओ, इसी नगर में रहना।" ***एनडुओ** का अभिप्राय वस्त्र पहनने से है; पवित्र आत्मा को पहन लेना।

सुसमाचार सबसे पहले किसे दिया गया???

गलातियों 3:8 और पवित्रशास्त्र ने **पहले ही से यह जानकर** कि परमेश्वर **अन्यजातियों** को विश्वास से **धर्मी ठहराएगा**, पहले ही से **अब्राहम को यह सुसमाचार सुना दिया** कि "तुझ में सब जातियाँ आशीष पाएँगी।"

परमेश्वर ने इस्राएल को यह सुसमाचार सुनाने के लिए चुना कि परमेश्वर कौन है और जगत के लोगों के लिए उसका उद्धार क्या है?

जब यीशु आया तो वह इस्राएल पर **क्रोधित** हुआ क्योंकि वे अन्य लोगों के पास सुसमाचार को लेकर नहीं जा रहे थे। बल्कि वे यह कहते थे "हम परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, वह सिर्फ हमसे प्रेम करता है, किसी और से नहीं।"

मत्ती 21:33-43 और 23:37-38 में दाख की बारी के स्वामी का दृष्टान्त पढ़ें।

यदि मैं आपकी कलीसिया में जाकर यह प्रश्न पूछूँ, "यहाँ कितने सेवक हैं?" तो कौन-कौन और कितने लोग अपने हाथ ऊपर उठाएंगे??

2 कुरिन्थियों 5:18-20 परमेश्वर ने मसीह के द्वारा अपने साथ **हमारा** मेलमिलाप कर लिया, और मेलमिलाप की **सेवा हमें** सौंप दी है। 19 अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ **संसार का मेलमिलाप** कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उस ने **मेलमिलाप का वचन हमें** सौंप दिया है। 20 इसलिये, हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा है। हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लो।

अब 2000 से भी अधिक वर्ष हो गए हैं, और हमने अब तक अपना काम समाप्त नहीं किया है!!!

- हम परमेश्वर के लोगों को यह नहीं सिखाते कि वे परमेश्वर के सेवक हैं।
- और हम उन लोगों की **पिता समान देखभाल** नहीं करते जिन्हें उसने हमें दिखाया है!!

आज यीशु कहाँ है?? और वह क्या कर रहा है??

इब्रानियों 10:12-13 परन्तु यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा, और उसी समय से इसकी **बाट जोह रहा** है, कि उसके बैरी उसके पाँवों के नीचे की पीढ़ी बनें।

वह किसकी प्रतीक्षा कर रहा है??? **पिताओं** की, कि वे **पुत्र** और **पुत्रियों** को सामर्थ्य के साथ उनकी नियुक्त सेवा के लिए तैयार करें और उन्हें भेजें। और फिर . . . शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा। रोमियों 16:20

यदि लोगों को परमेश्वर और उसके वचन की समझ और ज्ञान नहीं होगा तो वे आसानी से भटकाए जा सकते हैं।

यशायाह 5:13 इसलिये अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा बँधुआई में जाती है।

होशे 4:6 मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नष्ट हो गई।

1 तीमुथियुस 4:11 इन बातों की आज्ञा दे और सिखाता रह।

2 तीमुथियुस 2:2 इन बातों को विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।